NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

सामाजिक स्तरीकरण
(Social Stratification)

B.S.O.C.-110

B.A. Sociology (Hons.) - 4th Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Harmeet Kaur*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

सामाजिक स्तरीकरण

(Social Stratification)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

स्तरीकरण का परिचय (Introducing of Stratification)

1. प्रमुख अवधारणाएं : सामाजिक स्तरीकरण का अभिप्राय और नजरिया 1
(Basic Concepts : Meaning and Approaches of Social Stratification)

2. सामाजिक स्तरीकरण के आधार 17
(Bases of Social Stratification)

स्तरीकरण के सिद्धान्त (Theories of Stratification)

3. मार्क्सवादी सिद्धांत 30
(Marxian Theory)

4. वेबरीयन सिद्धांत 43
(Weberian Theory)

5. प्रकार्यात्मक सिद्धांत 54
(Functionalist Theory)

6. विशेषताबोधक और अन्योन्य-क्रियात्मक सिद्धांत 67
(Interactional and Attributional Theory)

पहचान और असमानताएँ (Identities and Inequalities)

7. प्रजाति और नृजातीयता 81
(Race and Ethnicity)

8. जाति और वर्ग 92
(Caste and Class)

9. लैंगिकृत असमानताएं 105
(Gendering Inequalities)

गतिशीलता और पुरुत्पादन (Mobility and Reproduction)

10. सामाजिक गतिशीलता की संकल्पनाएं और रूप 115
(Concepts and Forms of Social Mobility)

11. सामाजिक गतिशीलता के घटक एवं शक्तियां 126
(Factors and Forces of Social Mobility)

12. सांस्कृतिक तथा सामाजिक पुनरुत्पादन 136
(Cultural and Social Reproduction)

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

सामाजिक स्तरीकरण

(Social Stratification)

B.S.O.C.-110

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. वर्ग की चर्चा, सामाजिक स्तरीकरण के एक स्वरूप के रूप में कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-25, प्रश्न-5

प्रश्न 2. सामाजिक स्तरीकरण के मार्क्सवादी सिद्धान्त की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-33, प्रश्न-1

प्रश्न 3. सामाजिक स्तरीकरण के डेविस-मुरे के सिद्धान्त की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-55, 'डेविस और मूर का सिद्धान्त'

प्रश्न 4. प्रजाति से आप क्या समझते हैं? प्रजातिवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-81, 'प्रजाति की परिभाषा'

प्रश्न 5. लैंगिक अस्मिताओं की रचना को समाजीकरण कैसे प्रभावित करता है? उचित उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-109, प्रश्न-2

प्रश्न 6. सामाजिक गतिशीलता से आपका क्या अभिप्राय है? सामाजिक गतिशीलता के विविध स्वरूपों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-115, 'परिचय', 'गतिशीलता के प्रकार और रूप'

प्रश्न 7. जाति और वर्ग के बीच के 'नेक्सस' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-92, 'परिचय', पृष्ठ-93, 'जाति और वर्ग में गठजोड़', पृष्ठ-98, प्रश्न-4

प्रश्न 8. मार्क्सवादी परम्परा के नजरिये से सांस्कृतिक और सामाजिक पुनरुत्पादन की संकल्पना की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-139, प्रश्न-2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

Exam Held In

July – 2022

(Solved)

सामाजिक स्तरीकरण

(Social Stratification)

B.S.O.C.-110

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. सामाजिक स्तरीकरण के एक स्वरूप के रूप में वर्ग की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-17, 'वर्ग', पृष्ठ-19, 'वर्ग' (प्रश्न-1)

प्रश्न 2. वेबरवादी दृष्टिकोण की चर्चा, सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन के संबंध में कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, 'सामाजिक स्तरीकरण और वेबर'

प्रश्न 3. सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार्यवाद सिद्धांतों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-56, प्रश्न-1

प्रश्न 4. सामाजिक स्तरीकरण में जाति के विविध पहलुओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-67, 'जाति की प्रारंभिक व्याख्याएं', 'जाति का विशेषताबोधक सिद्धांत', पृष्ठ-68, 'जाति का अन्योन्य क्रियात्मक सिद्धांत'

प्रश्न 5. जाति और लैंगिकता के बीच संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-105, 'देह की समाजशास्त्रीय व्याख्या', पृष्ठ-109, प्रश्न 1

प्रश्न 6. सामाजिक गतिशीलता से आप क्या समझते हैं? सामाजिक गतिशीलता के कारकों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-115, 'परिचय', अध्याय-11, पृष्ठ-126, 'जनसांख्यिकीय घटक', पृष्ठ-128, 'व्यक्तिपरक घटक'

प्रश्न 7. जनजातियों और नृजातीयता के बीच संबंध बताइए।

उत्तर–जनजाति शब्द लैटिन शब्द 'ट्राइबस' से लिया गया है। पहले रोमनों ने इस शब्द का उपयोग समाज में विभाजन को निर्दिष्ट करने के लिए किया था। बाद में इस शब्द के इस्तेमाल से पता चलता है कि इसका मतलब गरीब लोगों से था। अंग्रेजी भाषा में वर्तमान लोकप्रिय अर्थ उपनिवेशवाद के विस्तार के दौरान विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका में प्राप्त किया गया था। भारत में एक 'जनजाति' का वर्तमान लोकप्रिय अर्थ अनुसूचित जनजातियों की सूची में शामिल लोगों की एक श्रेणी से है। जनजातीय आबादी अपेक्षाकृत पृथक और बंद समूह है, जो उत्पादन और खपत की सजातीय इकाइयां बनाते हैं। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण, गैर-आदिवासियों द्वारा उनका शोषण किया गया।

'एथनिक' शब्द ग्रीक शब्द 'एथनो' के अर्थ 'राष्ट्र' से लिया गया है। यह मूल रूप से उन आदिम जनजातियों या समाजों को निरूपित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, जिन्होंने सरकार और अर्थव्यवस्था के अपने सरलीकृत रूपों के आधार पर एक राष्ट्र का गठन किया था।

लेकिन समाजशास्त्री और सामाजिक मानव वैज्ञानिक पूर्व-औपनिवेशिक और बहुवचन समाजों के अपने अध्ययन के आधार पर नृजाति शब्द का व्यापक अर्थ में उपयोग करते हैं। उनके अध्ययन से कई समूहों के सह-अस्तित्व का पता चला, जिन्हें एक राष्ट्र के भीतर नृजाति कहा जा सकता है। समय के साथ नृजाति का अर्थ यह हो गया है कि जो लोगों के समूह से संबंधित हैं, जिन्हें कुछ विशेषताओं जैसे कि नस्ल, भाषा या संस्कृति के किसी अन्य पहलू से अलग किया जा सकता है।

नृजाति समूह, इसलिए एक सांस्कृतिक समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसके सदस्य या तो निम्नलिखित विशेषताओं में से कुछ या सभी साझा करते हैं–एक सामान्य भाषा, क्षेत्र, धर्म, नस्ल, सगोत्र विवाह, रीति-रिवाज और विश्वास। सदस्य सामान्य वंश में एक विश्वास भी साझा कर सकते हैं। इस परिभाषा के आधार पर हम कह सकते हैं कि यहूदी, नीग्रो, जापानी, मुस्लिम, मुंडा, ओराओं सभी विशिष्ट नृजातीय समूह बनाते हैं। जातीय समूह इस प्रकार उन लोगों

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

सामाजिक स्तरीकरण
(Social Stratification)

स्तरीकरण का परिचय
(Introducing Stratification)

प्रमुख अवधारणाएं : सामाजिक स्तरीकरण का अभिप्राय और नजरिया
(Basic Concepts: Meaning and Approaches of Social Stratification)

1

परिचय

सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया में समाज के समूहों और श्रेणियों को एक-दूसरे से भिन्न दर्जों में रखा जाता था। इसका आधार प्रतिष्ठा, संपदा एवं सत्ता की कसौटी था। सामाजिक स्तरों में पाए जाने वाले प्रदत्त और अर्जित गुण ऐसे दो प्रकार के पैमाने थे, जो सामाजिक स्तरीकरण के निर्धारकों के रूप में काम करने वाले सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं। सामाजिक स्तरीकरण का एक संस्था के रूप में उद्विकास एक निश्चित स्तर पर हुआ। आखेटक और भोजन संग्राहक समाज में भी सामाजिक स्तरीकरण के अपने-अपने स्तर थे। समाज के सदस्यों में ये स्तरीकरण आयु, लिंग, जाति, वर्ग, भूमित्व, प्रजाति और नृजातीयता के आधार पर भी हुआ। उत्पादन प्रौद्योगिकी के अल्पविकसित रहने के कारण कई समाजों ने जरूरत से ज्यादा उत्पादन नहीं किया, जिनके चलते उनके लिए संपदा का संचय करना संभव नहीं था। ऐसे समाजों में भी स्तरीकरण था, परंतु वहां सामाजिक स्तरीकरण ने संस्थागत रूप धारण नहीं किया।

अध्याय का विहंगावलोकन

उद्विकासीय प्रक्रिया

उत्पादन की प्रक्रिया में बुनियादी बदलाव आते ही सामाजिक स्तरीकरण का एक संस्था के रूप में बदलाव हुआ। जैसे ही पशु-पालन और कृषि में नये परिवर्तन आए, समाज ने पशु व अनाज का संपदा के रूप में संचय करना शुरू कर दिया। खाद्य संसाधन बढ़ने के कारण जनसंख्या बढ़ने लगी। उत्पादित सामग्रियों, वस्तुओं का लेन-देन और विनिमय भी बढ़ गया। जिस वर्ग का संपदा और सत्ता पर नियंत्रण अधिक था, उस वर्ग का विकास होने लगा। जटिल प्रक्रियाओं और श्रम विभाजन के चलते समाज में शहर और देहात का विभाजन उत्पन्न हुआ। सामाजिक जटिलता के कारण समाज को नियंत्रण करने के लिए संस्थाएं विकसित हुईं, जिनमें विशेषज्ञ कर्मियों को रखा गया। इस प्रकार सामाजिक स्तरीकरण संस्था उद्विकासीय प्रक्रिया के रूप में अस्तित्व में आई।

संयोजी सिद्धांत

सामाजिक स्तरीकरण के तीन मुख्य संयोजी सिद्धांत हैं-स्थिति, संपदा और सत्ता। उद्विकासीय प्रक्रिया का इन सिद्धांतों के बीच गहरा संबंध है। उदाहरण के लिए, जिस समाज में स्तरीकरण की संस्था नहीं थी, वहां दूसरों की अपेक्षा कुछ व्यक्तियों को उच्च सामाजिक स्थान प्राप्त था। इसके बावजूद भी वहां सामाजिक स्तरीकरण की संस्था का आविर्भाव नहीं हो सका। यह भेद योग्यता, सामाजिक-लिंग या समाज में प्रचलित अन्य भेदों पर आधारित था। सामाजिक स्तरीकरण लोगों के समूह के आधार पर होता है।

सामाजिक प्रस्थिति

यह सामाजिक स्तरीकरण का सबसे पहला सिद्धांत है। लोगों के समूहों का उनकी प्रतिष्ठा या आदर के रूप में वर्गीकरण सामाजिक प्रस्थिति कहलाती है। समूह के सदस्यों को जन्म से ही गुण या प्रतिष्ठा मिलती है। यह प्रदत्त गुण कहलाता है। इसलिए प्रस्थिति सिद्धांत को प्रदत्त सिद्धांत भी कहते हैं। भारत में जाति सामाजिक प्रस्थिति समूहों का एक उपयुक्त उदाहरण है।

संपदा

सामाजिक स्तरीकरण का दूसरा संयोजी सिद्धांत संपदा है। प्रौद्योगिकी में विकास और उत्पादन रीति में बदलाव ही संपदा है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पशु-पालन और कृषि में बदलाव ने न सिर्फ सामाजिक स्तरीकरण को जन्म दिया, बल्कि संयोजी सिद्धांतों को भी बदल डाला। अनाज, पशुधन, धातुएं, खनिज पदार्थ व मुद्रा संपदा के विभिन्न रूप हैं। संपदा का मुख्य उदाहरण वर्ग पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण है, जैसे–ज्यादा संपदा के स्वामी समाज में उच्च श्रेणी और कम संपदा के स्वामी निम्न श्रेणी में आते थे।

सत्ता

सामाजिक स्तरीकरण का तीसरा संयोजी सिद्धांत सत्ता है। समाज में ऐसा समूह जिसकी प्रस्थिति अच्छी हो और अधिक संपदा हो, वही सत्ता का प्रयोग कर सकता है। सत्ताधारी समूह अन्य समूहों को उन कार्यों, मूल्यों और विश्वासों को मानने के लिए बाध्य करता है, जिन्हें तय भी वही करता है। मैक्स वेबर के अनुसार, राज्य हमारे समाज की एक ऐसी संस्था है, जो सर्वाधिक शक्ति अथवा सत्ता रखता है। यही सर्वाधिक सत्ता व शक्ति प्रभुत्व में तबदील हो जाती है। सत्ता का सिद्धांत सामाजिक स्तरीकरण की धारणा में आते ही विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। जैसे कि राजनीतिक पहलू। आरक्षण नीति इसका अच्छा उदाहरण है। सत्ता की व्याख्या में मैक्स वेबर ने सत्ता तक अपनी पहुंच को ज्यादा-से-ज्यादा बढ़ाने में राजनीति, राजनीतिक दलों और उनकी भूमिका को सही माना है।

सामाजिक स्तरण के प्रकार

सामाजिक स्तरण के प्रमुख रूप से छः प्रकार हैं–

1. आयु वर्ग व्यवस्था
2. दास व्यवस्था
3. भूमि के स्वामित्व पर आधारित व्यवस्था
4. जाति व्यवस्था
5. वर्ग व्यवस्था
6. प्रजाति (नस्ल/नृजातीय स्तरण)

सामाजिक स्तरण की प्रत्येक व्यवस्था की व्याख्या और उसका महत्त्व सिद्ध करने के लिए स्पष्ट और ठोस सिद्धांत मौजूद हैं।

आयु वर्ग व्यवस्था

फोर्ट्स और ईवान-प्रिचर्ड (1940) ने ऐसे समाज को 'राज्य विहीन' कहा है, जहां कोई शासन नहीं होता और स्तरण आयु के आधार पर होता है। पूर्व अफ्रीकी समाजों (नन्दी और मसाई) में आयु के आधार पर पद और वरिष्ठता तय की जाती है। इनको समन्वयस्क श्रेणी 7 या एक समान आयु की श्रेणी कहते हैं। छः या सात वर्ष से 15 वर्ष के लोग प्रथम समवयस्क श्रेणी में आते हैं। नयी समवयस्क श्रेणी में कुछ रस्में (सुन्नत या शरीर पर छापे लगवाना) पूरी करके कबीले का सरदार बन जाता है। व्यक्ति का विवाह, जमीन का स्वामी या किस समारोह में जाना है, यह श्रेणियां तय करती हैं। स्तर की सदस्यता पर ही समाज में व्यक्ति की प्रस्थिति व हैसियत तय होती है।

इस व्यवस्था के अंतर्गत बचपन पार करने वाला व्यक्ति, कनिष्ठ और योद्धा जो कि कबीले की बाहरी हमलावरों से रक्षा करता है। वरिष्ठ योद्धा निर्णय लेते हैं और विवाद सुलझाते हैं एवं पुरखों की आत्माओं से भी संपर्क रखते हैं। श्रेणियां विभिन्न स्तरों से गुजरती हैं। सबकी सामाजिक प्रस्थिति एक साथ बदलती है। हमारे समाज में एक व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन होते हैं, परन्तु समवस्यक श्रेणी व्यवस्था वाले समाजों में सामूहिक परिवर्तन होते हैं।

खुले समाज को बढ़ावा मिलना, जिसमें पूरे जीवन से कोई निश्चित पद नहीं होता और अपना निर्णायक अधिकार होता है। इस व्यवस्था में स्तरण का रूप बदले बिना ही व्यक्ति में परिवर्तन हो जाता है।

दास व्यवस्था

ब्रिटेन में सन् 1833 में और अमेरिका में सन् 1865 में दास व्यवस्था का अंत हो चुका है। इस व्यवस्था का आधार आर्थिक असमानता थी। दास व्यवस्था के दो प्रकार हैं–प्राचीन दासता और आधुनिक दासता। प्राचीन दास प्रथा प्राचीन रोम व यूनान में प्रचलित सुधारवादी प्रथा थी। इसमें मालिकों के साथ दासों को भी अधिकार थे, जबकि आधुनिक दासता के अंतर्गत दास ही अपने मालिक की संपत्ति होता था। इससे कुलीन वर्ग उत्पन्न हुआ। दास प्रथा में कमी का कारण मजदूरों की अकर्मण्यता थी। ईसाई पादरियों ने भी दास प्रथा का अंत किया।

भूमि के स्वामित्व पर आधारित व्यवस्था

भूमि के स्वामित्व पर आधारित व्यवस्था यूरोप के सामंती समाजों में प्रचलित थी। समाज में व्यक्ति के पास कितनी जमीन-जायदाद है, यह व्यवस्था इस बात पर निर्भर थी। इस व्यवस्था में सबसे पहले कुलीन वर्ग, फिर व्यापारी और दस्तकार वर्ग आते थे। मध्य वर्ग के नीचे किसान और मजदूरों का स्थान था। एक अपराध के लिए दण्ड वर्गों के आधार पर दिए जाते थे। यह व्यवस्था जापान में भी देखी गई।

विभिन्न गुटों के चलते सामंती व्यवस्था में केवल दो प्रमुख गुट थे–कुलीन और पुरोहित। बाद में मध्य वर्ग का तीसरा गुट उभरा। मजदूरों को कोई अधिकार नहीं था, जबकि मध्य वर्ग ने सारी व्यवस्था ही बदल दी। मध्यकालीन यूरोप में सम्पत्ति और राजनीतिक सत्ता के रूप तथा संबंध इस व्यवस्था की अच्छी व्याख्या करते हैं।

जाति व्यवस्था

भारत में अनोखी जाति प्रथा की तुलना अन्य प्रकार के सामाजिक स्तरण से की जा सकती है। सभी समुदायों से गहरा संबंध है, चाहे जैन, अग्रवाल और अन्य। जाति व्यवस्था में गुट, श्रेष्ठता और हीनता सामाजिक रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं। जाति व्यवस्था की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1. जाति व्यवस्था की सदस्यता वैशिवक रूप से जीवन भर निश्चित है।
2. एक ही गोत्र वाले लोगों का समूह जाति है।
3. विभिन्न जातियां समाज में दूरी का कारण बनती हैं।
4. रीति-रिवाजों से ही जातिगत चेतना बढ़ती है।
5. इसमें व्यावसायिक धार्मिक विशेषज्ञता है।

जाति प्रथा के राष्ट्रीय स्तर पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ग आते हैं। जाति प्रथा के ग्रामीण स्तर पर समाज को समुदायों की 'जाति' में संस्कारों के शुद्धीकरण के बाद ही लोग ऊंची जाति में जा सकते हैं।

जाति प्रथा की मजबूत पकड़ और परिवर्तन की लहर ने भारत के सामाजिक स्तरीकरण को प्रभावित किया है, क्योंकि यहाँ हर समुदाय को दूसरे से दूर रखने के नियम का सख्ती से पालन करना होता है।

वर्ग व्यवस्था

वर्ग व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से भिन्न है। कोई कानूनी और धार्मिक मान्यता न होने के कारण ये वर्ग खुले समूह होते हैं। आर्थिक संपदा और आमदनी इस व्यवस्था का मूल आधार है। सांस्कृतिक शैलियों में यह अंतर देखा जा सकता है। वर्गों के सदस्य किसी भी वर्ग में जा सकते हैं।

पहला प्रश्न यह है कि वर्गों को कैसे निश्चित किया जाए। दूसरा, यह कि संपदा वाला व्यक्ति किसी भी वर्ग की सदस्यता ले सकता है। पहले प्रश्न में मैक्स वेबर का मत है कि संपदा और शक्ति की वर्ग निर्धारण में अहम भूमिका है। दूसरे प्रश्न में वर्ग चेतना का मुद्दा शामिल न हो।

कई समाजशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि हर समाज में उच्च, मध्यम और श्रमिक वर्ग होते हैं। डेनियल थॉमर ने मालिक, किसान और मजदूर वर्ग का नाम दिया। सामाजिक स्तरीकरण में वर्गों के भिन्न-भिन्न सिद्धांतों का विकास हुआ।

मैक्स वेबर के अनुसार, सामाजिक वर्गों का माल के उत्पादन और प्राप्ति के ढंग से उनका क्या संबंध है तथा प्रस्थिति समूहों को माल की खपत के तरीकों के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है। मैक्स वेबर के बाद भी कई समाजशास्त्रियों ने वर्ग और प्रस्थिति की धारणाओं का अध्ययन किया, परन्तु दोनों का विश्लेषण करना कठिन कार्य है।

प्रजाति (नस्ल) और नृजातियता

नस्ल और नृजाति के आधार पर स्तरण सामाजिक स्तरीकरण का अंतिम प्रकार है। प्रजाति में वे लोग, जिनके शारीरिक लक्षण पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक से होते हैं, प्रजाति कहलाते हैं। नस्लों का वर्गीकरण करते हुए नयी विचारधारा के अनुसार इंसान एक ही समूह के सदस्य हैं। सभी मनुष्यों का डी.एन.ए. 95 प्रतिशत एक जैसा है। बाकी 5 प्रतिशत के कारण एक-दूसरे से भिन्न हैं। एक नस्ल के अंदर भिन्नता होने के कारण यह वर्गीकरण वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कसौटी पर खरा नहीं उतरा।

जैविक दृष्टि से भिन्न लोगों को जनमत के आधार पर किसी नस्ल का सदस्य माना जाता है। समूह की इच्छाएं जनमत समाज से संचालित होती हैं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं। दक्षिण अफ्रीका भी नस्लवादी समाज का स्वरूप है।

प्रजातियों की शारीरिक बनावट के आधार पर संपदा और सत्ता का विभाजन भी हमें नस्लवादी विचारधाराओं से भरपूर नजर आता है। यदि नृजाति का आधार सांस्कृतिक लक्षण और समूह समान वाले लोगों का सत्ता समूह है, तो प्रजाति का आधार शारीरिक लक्षण है।

समाजशास्त्रियों के अनुसार शिकागो के नृजातीय समूह कई पीढ़ियों तक लुप्त रहने के बाद सामने आए। गैलनर ने बताया कि पौत्र वही सब याद रखना चाहता है, जो पुत्र ने भूलना चाहा था। समृद्ध समाज ने नृजातीय अल्पसंख्यक समाज को सामाजिक सुविधाओं से रोका। इसीलिए नृजातीय संघर्ष करते हुए लुप्त हो गए। संघर्ष की परिस्थितियों के कारण ही सामाजिक स्तरीकरण का अध्ययन करना जरूरी हो गया।

अवधारणा और सिद्धांत संबंधी कुछ मुद्दे

सिद्धांत संबंधी कुछ मुद्दों का संबंध सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक क्रम व्यवस्था से है। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक तीन व्यवस्थाएं हैं। संस्थागत संरचनाएं समाज के क्रम की प्रकृति से प्रभावित होती हैं। ये स्थिति समूहों में विद्यमान रहती हैं।

सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत आनुवंशिक अधिकार, पैतृक संपत्ति, कई प्रकार के प्रदत्त, विशेषकर सत्ताधिकार आते हैं। भारत में जातिगत स्तरीकरण इस सिद्धांत को प्रतिबिंबित करता है। सजातीय विवाह भी इस सिद्धांत के अनुरूप है। राजनीतिक व्यवस्था सत्ताधिकार की आकांक्षा और साधना पर आधारित है। यह व्यवस्था राजनीतिक दलों और संगठनों के माध्यम से सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्थाओं तक पहुंचने का साधन बनती है।

वेबर का नजरिया

वेबर की अवधारणा और सिद्धांत संबंधी नजरिया सामाजिक प्रसंग को समझना और व्याख्या करना है। ये अवधारणाएं ऐतिहासिक व्यक्ति या घटनाओं का काल्पनिक चित्रण हैं, ताकि समाजशास्त्री अवधारणाओं की रचना कर सकें। ये काल्पनिक अवधारणाएं आदर्श होती हैं। पर मानवीय न होकर चिंतनात्मक और मानसिक रचनाएं होती हैं। वेबर के मतानुसार सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत को इसी रूप में लिया जाना चाहिए, क्योंकि एक पद्धति और परिवर्तन की प्रक्रियाओं के रूप में सामाजिक स्तरीकरण को समझने में इस सिद्धांत ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

द्वंद्वात्मक नजरिया

कार्ल मार्क्स का द्वंद्वात्मक नजरिया एक और स्थापित सिद्धांत है। इसमें कार्ल मार्क्स ने सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणाओं

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

की श्रेणियों में उत्पादन विधि और उत्पादन संबंधों को वगीकृत किया है। उत्पादन की विधियां आदिम, सामंती और पूंजीवादी हैं। आदिम विधि में आदिम औजार इस्तेमाल होने के कारण यह भोजन-संग्राही और शिकारी समुदायों में प्रचलित थीं। संपत्ति और उत्पादन के संसाधनों का संचय होते ही सामंती विधि प्रचलन में आई। सामंती विधि के अंतर्गत भू-स्वामी का सभी आश्रित लोगों पर अधिकार था। कृषक, दास, व्यापारी और दस्तकार इस पद्धति के अंग थे। सामंत का उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण होना ही अन्य सामाजिक स्तरों का आधार बना। सामंतवाद की संस्थाएं विशेषाधिकारों और पैतृक प्रभुत्व का आधार थीं।

पूंजीवाद का उदय

सामाजिक विकास-क्रम में पूंजीवाद के उदय से एक नए दौर की शुरुआत हुई। सामंतवाद की जगह पूंजीवाद ने ली। पूंजीवाद की शुरुआत कारखाना विधि के विकास, कृषकों तथा मजदूरों का गांव से शहर की ओर जाना, बाजार में पूंजी का संचय आदि से हुई। इससे दो नए वर्ग उत्पन्न हुए–पूंजीवादी उद्यमी और श्रमिक वर्ग। दोनों वर्गों द्वारा क्रांति लाने के बाद कई देशों में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हुई, जैसे–सोवियत संघ, चीन और वियतनाम। समाजवादी व्यवस्था के कमजोर पड़ने पर उनकी जगह पूंजीवाद ने ले ली।

मार्क्सवादी सिद्धांत सामाजिक व्यवस्था को ऐतिहासिक, भौतिकवादी परिस्थितियों की उपज मानता है। ये स्थितियां सार्वभौमिक हैं, जो कि किसी भी परिवर्तन के कारण बदल रही हैं। मार्क्स का मानना है कि सामाजिक व्यवस्था को बदले बिना सुलझाया नहीं जा सकता। इस प्रक्रिया के द्वारा समाज में क्रांति आ सकती है। शोषित वर्ग पूंजीवादी वर्गों के खिलाफ संघर्ष करता है। इस प्रकार के सामाजिक स्तरों के अवरोध किए बिना समाजवादी व्यवस्था की स्थापना नहीं हो पाती। सामाजिक स्तरीकरण के बिना कार्य का सामाजिक विभाजन जरूर होता है।

डारहेंडॉर्फ और कोजर

समाजशास्त्री रॉल्फ डारहेंडॉर्फ और लुईस कोजर अंतर्द्वंद्व की सार्वभौमिकता को सामाजिक स्तरीकरण के हर रूप में स्वीकारते हैं। ये द्वंद्व को वर्ग संघर्ष और क्रांति के सिद्धांत से जोड़ने की बजाए सामाजिक स्तरीकरण में मौजूद अंशों से जोड़ते हैं।

समाज के एक स्तर का दूसरे स्तरों के ऊपर सत्ताधिकार ही द्वंद्व का आधार है। मार्क्स के अनुसार क्रांतिकारी विधियों से सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन का द्योतक नहीं, जबकि द्वंद्व इस व्यवस्था की अंदरूनी गतिशीलता के बारे में बताता है। द्वंद्व सिद्धांत ऐतिहासिक भौतिकवाद के नजरिए को नहीं स्वीकारते, जबकि यह सिद्धांत इसके कार्यपरक दृष्टिकोण के ज्यादा नजदीक है।

प्रकार्यवादी सिद्धांत

प्रकार्यवादी सिद्धांत मार्क्सवादी नजरिए से भिन्न है। इस सामाजिक व्यवस्था में आत्म रख-रखाव और आत्म-नियमन की क्षमता के साथ-साथ समस्याओं का परस्पर निर्भर होना भी है। यह सिद्धांत द्वंद्वों से परे नहीं, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और सहमति निर्माण के नियमों का लगातार पुनर्संयोजन है। समाजीकरण, शिक्षा और लोकतांत्रिक सहभागिता के द्वारा सशक्तीकरण की प्रक्रियाओं से समाज में उत्पन्न अंतर्विरोधों को सबकी सहमति से सुलझाया जा सकता है।

समाजशास्त्रियों ने सभी सैद्धांतिक नजरियों का उपयोग किया। भारत के वर्गों पर जो अध्ययन हुए वह मार्क्सवाद के ऐतिहासिक भौतिकवाद सिद्धांत को प्रयुक्त करते हैं। सामाजिक स्तरीकरण के कई अध्ययनों में वेबर के सिद्धांत को माना है। विभिन्न प्रकार के अध्ययन हुए जैसे कि जाति, वर्ग और सत्ताधिकार, जाति भेद-भाव की नीतियां, उद्योग में विकास तथा शिक्षा। इनमें वर्ण व्यवस्था उभरकर सामने आई। फिर भी किसी उच्च जाति को सत्ताधिकार और उच्च दर्जा नहीं मिलता, भले ही वर्ण व्यवस्था में उन्हें उच्च दर्जा मिला हो। इसीलिए समाजशास्त्री आर्थिक दर्जे के लिए वर्ग, राजनीतिक और जातिगत दर्जे को प्रयोग में लाए। क्रांति ने पिछली चली आ रही गतिशीलता को सामाजिक स्तरीकरण में उपयुक्त किये जाने वाले सार के सिद्धांत को तोड़ा है। कई नई प्रक्रियाएं सामाजिक स्तरीकरण के पुराने रूपों और संस्थाओं के लिए चुनौती हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. आयु के आधार पर निश्चित स्तरों को क्या नाम दिया गया है।

उत्तर–आयु के आधार पर निश्चित स्तरों को समवयस्क श्रेणी 7 या एक समान आयु की श्रेणी का नाम दिया गया है। इसके अतिरिक्त इसे प्रथम समवयस्क श्रेणी और नई समवयस्क श्रेणी भी कहा जाता है। आयु के आधार पर स्तरों को कनिष्ठ योद्धा और वरिष्ठ योद्धा की श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

पूर्व अफ्रीकी समाजों में स्तरण आयु के आधार पर किया जाता है। समाजशास्त्री फोर्ट्स और ईरान प्रिचर्ड ने ऐसे समाज को 'राज्य विहीन' कहा है, जिसमें शासन नहीं होता। ऐसे समाज में प्रधान का कोई पद नहीं होता। अगर प्रधान के पास अधिकार हो भी, तो वे धार्मिक अधिकार न होकर रस्मी अधिकार ज्यादा होते हैं। इस प्रकार अफ्रीका में मसाई और नन्दी कबीलों में आयु का सिद्धांत प्रमुख रूप से प्रचलित है। इन देशों में पद और वरिष्ठता का आधार आयु को माना जाता है। आयु को आधार मानकर पद दिया जाता है। निर्धारित स्तरों को "समवयस्क श्रेणी" या एक समान आयु की श्रेणी कहते हैं। एक निश्चित वर्ष के अंतराल में जन्मे सभी व्यक्ति एक श्रेणी में आते हैं। प्रथम समवयस्क श्रेणी में 6 या 7 वर्ष से लेकर 15 वर्ष तक के लोग आते हैं। इस श्रेणी की सदस्यता सामान्य किशोरवस्था तक समाप्त हो जाती है। नई श्रेणी में पहुंचने के लिए कुछ रस्में, जैसे–सुन्नत या शरीर पर छापे लगवाना आदि

www.neerajbooks.com